2201000104040037
EXAMINATION NOVEMBER 2024 (ATKT EXAM)
BACHELOR OF ARTS (FOURTH SEMESTER)
HINDI - IX (DHRUVSWAMINI) LEVEL 4

[Time: As Per Schedule] **[Max. Marks: 50]**

Instructions:
1. Fill up strictly the following details on your answer book
   a. Name of the Examination : **BACHELOR OF ARTS (FOURTH SEMESTER)**
   b. Name of the Subject : **HINDI - IX (DHRUVSWAMINI) LEVEL 4**
   c. Subject Code No : **2201000104040037**
2. Sketch neat and labelled diagram wherever necessary.
3. Figures to the right indicate full marks of the question.
4. All questions are compulsory.

Seat No:

Student's Signature

Q.1 निम्नलिखित बहुवैकल्पिक प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए | **10**

(१) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में खिंगिल पात्र कौन हैं?

(A) शकराज का संदेशवाहकज्ञ (B) रामगुप्त का भाई
(C) शकराज का सेनापति (D) समुद्रगुप्त का मंत्री

(२) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में किस राजवंश की कथा का वर्णन हैं?

(A) गुप्तवश (B) मौर्यकुल
(C) सूर्यवंशी (D) राजपूत

(३) मंदाकिनी सदैव किसका पक्ष लेती हैं?

(A) रामगुप्त (B) चंद्रगुप्त
(C) न्याय (D) ध्रुवस्वामिनी

(४) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के अनुसार चंद्रगुप्त की वाग्दत्ता कौन थी?

(A) कोमा (B) ध्रुवस्वामिनी
(C) मंदाकिनी (D) खड्गधारिणी

(५) जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक गुरु कौन थे?

(A) महामहोपाध्याय देवीप्रसाद (B) देवदत्त

(C) वेणीप्रसाद (D) माधव प्रसाद

Q.2 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल समस्या का निरूपण कीजिए । **13**

अथवा

सिद्ध कीजिए किं ध्रुवस्वामिनी' नाटक में इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय मिलता हैं ।"

Q.3 "कोमा के चरित्र में भारतीय आदर्शों की छटा दिखाई देती है । इस उक्ति को समझाइए| " **13**

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का नायक आप किसे मानते है? सकारण स्पष्ट कीजिए ।

Q.4 **टिप्पणी लिखिए :** **7**

(अ) 'ध्रुवस्वामिनी'नाटक के संवाद - योजना ।

अथवा

(अ) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की भाषा - शैली ।

ससंदर्भ व्याख्या कीजिए: **7**

(ब) "राज्य और संपत्ति रहने पर राजा को - पुरुष को बहुत - सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं, किंतु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता ।"

अथवा

(ब) " जिसे अपनी स्त्री को दूसरे की अंकगामिनी बनने के लिए भेजने में कुछ संकोच नहीं वह क्लिव नहीं तो और क्या है? मैं स्पष्ट कहता हूं कि धर्मशास्त्र रामगुप्त से ध्रुवस्वामिनी के मोक्ष की आज्ञा देता हैं ।"

****